जगज्ज्योतिर्म्मल्ल कृत

दशावतारनृत्यम् ओ षोडशगीतम्

डाक्टर श्रीरामदेवझा
एम.ए., पी-एच.डी.
यूनिवर्सीटी प्रोफेसर, मैथिली-विभाग
ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा

मिथिला-रिसर्च-सोसाइटी
लहेरियासराय, दरभंगा

जगज्ज्योतिर्म्मल्ल कृत

दशावतारनृत्यम् ओ षोडशगीतम्

DASHAVATAR NRITYAM O SHODASHA GEETAM

BY JAGAJJYOTIRMMALLA

△ सर्वाधिकार डाक्टर श्रीरामदेवझा

△ प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
लहेरियासराय, दरभंगा

△ प्रथम संस्करण : अप्रैल, १९८८

△ मूल्य : २०=००(बीस टाका मात्र)

△ मुद्रक : बजरंग प्रेस, (लक्ष्मी भवन), गंगासागर, दरभंगा ।

अलमतिविस्तरेण

जगज्ज्योतिर्म्मल्लक स्थान मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे केहन छन्हि से कहबाक आब प्रयोजन नहि रहि गेल अछि। जहिना कतोक वर्ष पूर्व धरि ओ अपरिचित-अचर्चित छलाह, तहिना आब सुपरिचित-सुचर्चित भऽ गेल छथि। तथापि एखन धरि हुनक समस्त साहित्यिक अवदान प्रकाशमे नहि आबि सकल अछि। ओहि दिशामे होइत प्रयासक एक गोट और चरणक रूपमे थिक ई 'दशावतारनृत्यम् ओ षोडश गीतम्'। जगज्ज्योतिर्म्मल्लक काव्य-प्रवृत्तिमे विषय ओ शैलीक जे वैविध्य देखल जाइत अछि से वास्तवमे मध्यकालीन मैथिलीक विषय ओ शैलीक वैविध्यक सेहो परिचायक थिक। 'दशावतार-नृत्यम् ओ षोडश गीतम्' पारम्परिक परिपाटीसँ हटि एकटा भिन्न साहित्यिक धाराक सूचक थिक। ई दुहू लघु कृति श्रव्यकाव्य नहि, दृश्यकाव्य थिक तथा एकर चारुता तखन और निखरैत होयतैक जखन एकर सविधि प्रदर्शन होइत छल होयतैक। किन्तु सम्प्रति एकर काव्येपक्ष पर सन्तोष करऽ पड़त। तथापि नाट्यशास्त्र ओ नृत्यशास्त्रक आधार पर एकर विश्लेषण होयब अपेक्षित अछि। तखनहि मैथिली रंगमंचक प्राचीन गरिमामय स्वरूपक उद्घाटन सम्भव भऽ सकत।

प्रथम रचनामे कृष्णक दशावतारक वर्णन कयल गेल अछि। गीत, वाद्य नृत्य तीनूक समावेश रहबाक कारणे एकरा 'दशावतार नृत्यम्' कहल गेल अछि। लगैत अछि जेना एहि कृतिक अवतारणा उड़ीसाक ओडिसी नृत्यक कतोक शताब्दी पूर्वक प्रचलित शैलीमे कयल जाइत छल। ओडिसियोमे जयदेवक दशावतार वर्णनक प्रदर्शनक प्राचीन परिपाटी अछि तथा जगज्ज्योतिर्म्मल्ल सेहो जयदेवहिक अनुसरण करैत हुनक एक-एक अवतारक भावकेँ स्वतन्त्र रूपमे विशद कयने छथि। परन्तु एहि दशावतार-वर्णनात्मक गीत-गुच्छकेँ बिना नृत्यहुक गान कयल जाइत छल तेँ कतोक प्रतिमे एकर नाम 'दशावतार गीतम्' सेहो भेटैत अछि।

दोसर रचनाक नाम अछि 'षोडश गीतम्'। कोनो-कोनो हस्तलेखमे एकरा 'भाषा संगीतम्' सेहो कहल गेल अछि। एहि काव्यकृतिमे गीत, वाद्य ओ नृत्यक संगहि नाट्य केर समावेश सेहो कयल गेल अछि। एहिमे कृष्ण ओ गोपीक संवाद रूपमे, गीत, श्लोक ओ गद्यवाक्य सभक प्रयोग भेल अछि। विभिन्न लक्षणक आधार पर एहि रचनाकेँ 'रासक' अथवा 'हल्लीसक'क कोटिमे राखल जा सकैत अछि। किन्तु अन्तिम रूपसँ किछु निष्कर्ष देबासँ पूर्व एहि पर अओरो नाट्यशास्त्रीय विचार अपेक्षित लगैत अछि। 'षोडश गीतम्'मे

'नचारी'क प्रयोग सेहो भेल अछि किन्तु एहि ठाम शिव-विषयक अनिवार्यताक कोनो संकेत नहि अछि। अधिकांश नचारी-गीतमे श्रृंगार रसक व्याप्ति अछि। यद्यपि चौदहम संख्यक नचारी गीतमे भक्तिभाव पूर्ण शिव-स्वरूपक वर्णन कयल गेल अछि। 'षोडश गीतम्' एकटा लघुकृति होइतो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एहिमे प्राचीन मिथिला-मैथिलीक राग-रागिणी, नृत्य-विधान, नाट्य-प्रक्रिया सम्बन्धी पर्याप्त अनुसन्धेय सामग्री अव्याख्यात ओ दुर्बोध रूपमे संरक्षित अछि।

जगज्ज्योतिर्म्मल्लक दुहू लघु काव्यकृति चिर प्रतीक्षाक पश्चात् येनकेन-प्रकारेण अक्षर-जगतक समक्ष प्रस्तुत कयल जा रहल अछि। अनुसन्धानक कोटिक महत्त्वपूर्ण सामग्री होइतहु एकरा सहज, सरल काव्यकृतिएक रूपमे उपस्थित कैल गेल अछि। तेँ फुटनोट, पाठान्तर इत्यादिसँ एकरा सर्वथा मुक्त राखल गेल अछि, जाहिसँ काव्यास्वादनमे कोनो व्याघात नहि हो। दुहू रचनाक परिचयात्मक समालोचनामे पर्याप्त सामग्रीक संचयन कयल गेल अछि जे भावी-अनुसन्धानक मार्ग-दर्शनमे नितान्त सहायक सिद्ध होयत। अवश्ये, एहिसँ विद्वान् ओ प्राचीन साहित्य-जिज्ञासु लोकनिकेँ सन्तोष होयतनि।

वास्तविक अनुसन्धान ओ थिक जे इतिहासक मान्यताकेँ बदलय, नव मान्यता स्थापित करय अथवा कोनो दुर्बल ओ संदिग्ध मान्यताकेँ सप्रमाण सम्पुष्ट करय। डा० रामदेवझा एहि प्रकारक अनुसन्धानमे अपन एकटा विशिष्ट स्थान बना लेने छथि आ' जाहि प्रकारक सामग्री सभ निरन्तर प्रकाशमे अनैत रहलाह अछि से इतिहासकार लोकनिकेँ अपन कतोक धारणा पर पुनर्विचार करबाक लेल विवश कऽ देलकनि अछि। जगज्ज्योतिर्म्मल्लकेँ मैथिली साहित्यक इतिहासमे महत्त्वपूर्णस्थान पर प्रतिष्ठित करबाक श्रेय हिनकहि छन्हि। ओही प्रयासक एकटा महत्त्वपूर्ण अवदान थिक ई 'दशावतार नृत्यम् ओ षोडश गीतम्'।

हम एहि कृतिक स्वागत करैत छी आ' एहि लेल डा० रामदेवझाकेँ साधुवाद दैत छिऐन्ह।

श्रीशैलेन्द्रमोहनझा

जूड़शीतल, १९८८

विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्ष
मैथिली विभाग
ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा

जगज्ज्योतिर्म्मल्लक दशावतारनृत्यम्

—डाक्टर रामदेव झा, एम० ए०, पी-एच० डी०

जगज्ज्योतिर्म्मल्ल नेपालक मल्ल राजवंशक भक्तपुर शाखाक राजा छलाह। हिनक शासन काल १६१३ ई० सँ १६३७ ई० धरि रहल। मैथिली साहित्यक इतिहास मे हिनक तीन गोट नाटक मात्र चर्चित भेल छल। सेहो प्रकाशित रूप मे सोझाँ नहि आबि सकल छल। हम शैव साहित्यक अनुसंधान-क्रम मे काठमाण्डूक राष्ट्रीय अभिलेखालय (पूर्व मे वीर लाइब्रेरी) मे हस्तलिखित ग्रन्थ सभक अवलोकन करऽ लगलहुँ तखन जगज्ज्योतिर्म्मल्लक कृति-विस्तारक अनुमान भऽ सकल।

जगज्ज्योतिर्म्मल्लक साहित्यिक प्रतिमा; गीत ओ नाटक, गद्य ओ पद्य सभ क्षेत्र मे देखबा मे आयल। भाव, भाषा, छन्द आदिक क्षेत्र मे परम्परित ओ नूतन उभय प्रकारक प्रयोग ओ कयने छथि। गीतक क्षेत्र मे विद्यापति मैथिली साहित्यक उच्चतम शिखरक निर्विवाद प्रतिमान छथि। किन्तु जगज्ज्योतिर्म्मल्लक कृति देखला उत्तर लगैत अछि जे जँ ओ मिथिला मे भेल रहितथि तँ आलोचक गण कें अपन मन्तव्य पर पुनर्विचार करऽ पड़ितनि।

जगज्ज्योतिर्म्मल्लक काव्य मे वर्ण्य विषय, रस छन्द ओ भासक जे वैविध्य अछि से अन्य कोनहु प्राचीन कवि मे नहि देखल जाइत अछि। कखनो-कखनो एहने भावक गीत कहि गेलाह अछि जे साधारणतः कविक दृष्टि पर नहि आबि पबैछ। ताहू मे एहन कविक हेतु तँ और कठिन जे स्वयमेव राजा होथि। जगज्ज्योतिर्म्मल्लक दुइ एकटा गीत उदाहरणार्थ प्रस्तुत कयल जा सकैत अछि—

फल पाके कदली होअ नाश।
तैसन विषय रस तेजह आस॥
सुत मित दारा केउ न अपना।
ई सबे जानह रयणिक सपना॥
परम कठिन एह माया बन्ध।
दिन दश लागि करह जनु धंध॥

दिन जामिनि ऋतु पुनु पुनु आव।
मानुष देह सदा नहि पाव।
नृप जगजोति मल्ल जगत निरास।
शिव पद सेओव जञो धरि साँस॥

एकटा हास्य रसक गीत मे बुढ़बा-बुढ़ियाक प्रेम-व्यापारक उपहास कयल गेल अछि—

बुढवा का मेल बुढिया संग।
बुढिआ ताकए परसञे रंग॥
काजर सिन्दुर लेअ सँभारि।
घोघटी झापि चले बुढि नारि॥
झरि परु दाँत वदन करे झाप।
से देखि पुरुषक हो बड ताप॥
हसि-हसि (कर) किछु नयन विभंग।
बुढ़ि न सोहावए मदन तरंग॥
नृप जग जोति हास रस गाव।
प्रथम देव तसु बूझए भाव॥

एकटा गीतमे भारत-भूमिक प्रशंसा कएल गेल अछि जे प्राचीन मैथिली साहित्य मे अलभ्य अछि—

भारत पुण्य भूमि अति पावन के नहि देखि जुड़ाई।
सुर नर किन्नर असुर नागवर सकल मनोरथ पाई॥

किन्तु किछु वर्ष पूर्व धरि एहि कविक कोनो साहित्य प्रकाश मे नहि आबि सकल छल तखन साहित्यिक मूल्यांकनक चर्चे की कयल जाय। बड़ प्रयत्न सँ हिनक दुइ गोट नाट्य कृति प्रकाशित भऽ सकल अछि। एकटा 'हर गौरी विवाह' नाटक प्रकाशित भेल अछि। एकर एक मात्र प्रति इंगलैंडक कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय मे अछि। ओकर माइक्रोफिल्मक आधार पर पाठ ओ स्वरूपक उद्धार कऽ हम सम्पादन कऽ १९७० मे प्रकाशित कराओल। दोसर नाटक 'कुँजविहारक' प्रतिलिपि राष्ट्रीय अभिलेखालय सँ प्राप्त कऽ ओकर हमहीं सम्पादन कयल जे कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक अनुसंधान-पत्रिका 'मनीषा' मे १९७६क

द्वितीय अंक मे प्रकाशित भेल अछि। डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' हुनक 'गीत पंचाशिका'क सम्पादन कयलनि अछि।

जगज्ज्योतिर्मल्लक अन्य नाट्यकृति एखनो अनुसंधान ओ प्रकाशनक अपेक्षा रखैत अछि। एहि सँ अतिरिक्त हिनक रचित अजस्र गीत सभक अनेको संग्रह सभ विभिन्न नाम सँ राष्ट्रीय अभिलेखालय मे पड़ल अछि। एही संग्रह सभमे एकटा संग्रह अछि 'दशावतार नृत्यम्'। ई एकटा लघु किन्तु प्रसिद्ध कृति मानल जाइत रहल अछि तैं एकर अनेक हस्तलिखित प्रति उपलब्ध अछि। किछु ठाम एकर नाम 'दशावतारगीतम्' सेहो भेटैत अछि। दशावतारक गीत सभ कविक अन्य वृहत् गीत संग्रह सभ मे एकत्रैव वा स्फुट रूप मे सेहो संकलित भेटैत अछि।

एहि संग्रह मे सोलह गोट गीत अछि। प्रथम गीत मंगल-गीत थिक जाहि मे शिवक वन्दना तथा संगीत ओ नृत्यक स्वरलिपि देल गेल अछि। दोसर गीत जयदेव कवि रचित दशावतार-स्तुति अछि। तेसर गीत मे जगज्ज्योतिर्मल्ल भाषा मे दशावतारक संक्षिप्त वर्णन कयलनि अछि। चारिम सँ तेरहम धरिक दस गीत मे क्रमशः मीन, कच्छप, कोल, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध ओ कल्कि अवतारक वर्णन कयल गेल अछि। तेरहम गीतक उत्तरार्द्ध मे कोन युग मे कतेक अवतार भेल अछि तकर संख्या देल गेल अछि। तदनुसार विष्णुक विभिन्न अवतार विभिन्न युग मे होइत रहलनि, से सतयुग मे चारि त्रेता मे दुइ, द्वापर मे तीन तथा कलियुग मे एक अवतार भेल।

चौदहम गीत मे संगीत ओ नृत्यक विभिन्न अंक, उपकरण विशेषता ओ फल कथन अछि। पन्द्रहम गीत मे महादेवक वन्दना अछि। अन्तिम गीत मे दशावतार-महिमा, त्रिदेवक एकात्मस्वरूप ओ भक्तिक महत्व प्रतिपादित भेल अछि। अन्त मे भरत वाक्य रूप मे एकटा संस्कृतक श्लोक देल गेल अछि।

'दशावतार नृत्यम्' नामे सँ स्पष्ट अछि जे ई एकटा नृत्य नाटिका थिक। एकर प्रस्तुतीकरण अनेक नर्त्तक द्वारा होइत छल। विभिन्न अवतारक स्वरूप धारण कऽ बेराबेरी मंच पर आबि एक एक नर्त्तक एक एकटा अवतारक भाव प्रस्तुत करैत छल। नेपथ्य सँ गायक वृन्द द्वारा अवतारक गान होइत रहैत छलैक आ नर्त्तक मस्तक, आँखि, हस्त, चरण आदिक संचालन ओ मुद्राप्रदर्शन द्वारा गीतक भाव कें अभिव्यक्त करैत छल। कखनो एक वा दुइ नर्त्तक सेहो एहि नृत्य कें प्रस्तुत करैत छल। तेहना स्थिति मे नर्त्तकक आहार्य सामान्य नर्त्तकक रहैत छलैक। कखनो कखनो नर्त्तक स्वयं गीत-गान पूर्वक अभिनय प्रदर्शित करैत छल। वीणा, वंशी, मृदंग, झालि आदि विभिन्न वाद्य यंत्रक निरंतर संगति होइत रहैत छलैक।

जगज्ज्योतिर्म्मल्ल अपन दशावतार वर्णन मे जयदेवक अनुसरण कयलनि अछि जे हुनक गीत कें उद्धृत कऽ सिद्ध कऽ देलनि। किन्तु स्वयं जयदेव कतऽ सँ प्रेरणा ओ प्रभाव ग्रहण कयलनि से एकटा विचारणीय प्रश्न अछि। विभिन्न पुराण मे विष्णुक दस ओ चौबिस अवतारक गणना कयल गेल अछि। किन्तु ओहि मे दशावतार विशेष प्रशस्त रहल अछि। श्रीमद्भागवत मे कहल गेल अछि—

विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महा संकटे। (३।६५)

दसम-एगारहम शताब्दीक समाज मे दशावतारक स्तुतिक विशिष्ट स्थान भऽ गेल छल। ओकर प्रभाव देवभाषा ओ लोक भाषा दुहू मे देखल जाइछ। शंकराचार्य विरचित एकटा दशावतार स्तोत्र उपलब्ध अछि। ओ कोन शंकराचार्यक थिकनि से कहब कठिन अछि किन्तु रचना बारहम शताब्दी सँ पूर्वहिक थिक। दक्षिण भारतक कोनो वेङ्कटेश्वर कविक दशावतार स्तुति वैष्णव समाज मे विशेष प्रचलित अछि तथा वैष्णव द्वारा प्रयुक्त स्तोत्र संग्रह सभ मे संकलित भेटैत अछि। एगारहम शताब्दी मे काश्मीरक आचार्य क्षेमेन्द्र 'दशावतार चरित' नामक एकटा काव्येक रचना कयने छलाह। बारहम शताब्दी मे जयदेव अपन गीतगोविन्द काव्यक आरम्भ मे दशावतारक स्तुति कयलनि अछि। हजारी प्रसाद द्विवेदी एहि पर अपन मन्तव्य देने छथि जे—'एहन लगैत अछि जेना एगारहम-बारहम शताब्दी मे दशावतार वर्णन बहुत आवश्यक बूझल जाय लागल छल। (हिन्दी साहित्य का आदिकाल, पृ० ११०) पृथ्वीराज रासोक द्वितीय समय मे एहने एकटा दशावतारक वर्णन विस्तार सँ कयल गेल भेटैत अछि। कविशेखर ज्योतिरीश्वर 'वर्णरत्नाकर' मे दशावतारहुक उल्लेख कयने छथि।

दशावतारक वर्णनक परम्परा लोक भाषा मे विद्यमान छल तकर प्रमाण पृथ्वीराज रासोक दशावतारक-वर्णन ओ वर्णरत्नाकरक दशावतार-गणना थिक। मिथिलाक लोक साहित्य मे सेहो दशावतार-गान उपलब्ध अछि जे ओहि प्राचीन परम्पराक अवशेष मानल जा सकैत अछि। मैथिली लोक साहित्यक ओ दशावतार वर्णन एतय उद्धृत कऽ देब अनुपयुक्त नहि होयत।

ओहि गीतक पूर्व कथा थिक जे यशोदा स्नान करबाक हेतु यमुना दिस जाइत छथि तँ कृष्ण पाछाँ लागि जाइत छथिन। लाख मना कयलो पर नहि मानैत छथिन तखन यशोदा हुनका डेरबैत छथिन जे 'यमुना मे नहि जाइ। घोघर छै, धऽ लेत।' एहि पर कृष्ण यशोदा सँ घोघर देखयबाक जिद्द करऽ लगैत छथिन। ओहीं क्रम मे दसो अवतारक वर्णन करैत कहैत छथिन जे कोनहु अवतार मे 'घोघर' नहि देखल तें जे घोघर आनि कऽ देखा देताह तनिका महाज्ञानी मानबनि—

हे माता गोपाल गोवर्धन गोविन्द गरुड़ा ज्ञानियाँ।
जे मोहि घोघर आनि देखौता से छथि महा ज्ञानियाँ॥
मीन रूप जहिया हम भेलहुं अगम निगम जल रहिया।
पैसि पताल माटि हम आनल घोघरो ने देखल तहिया॥
हे माता गोपाल······॥

कछव रूप जहिया हम भेलहुँ धरनी टेकल तहिया।
पैसि पताल महासुर मारल घोघरो ने देखल तहिया॥
हे माता गोपाल ······॥

व्राह रूप जहिया हम भेलहुँ दूइ दंत भुँइ रहिया।
सवा लाख पर्वत हम फाड़ल घोघरो ने देखल तहिया॥
हे माता गोपाल ······॥

नरसिंह रूप जहिया हम भेलहुँ खंभ फाड़ि अवतरिया।
हरिनाकंसक उदर विदारल घोघरो ने देखल तहिया॥
हे माता गोपाल ·······।

बओन रूप जहिआ हम भेलहुँ बलि के छारल तहिया।
तीन डेग वसुधा हम नापल घोघरो ने देखल तहिया॥
हे माता गोपाल ······॥

परसुराम जहिया हम भेलहु पंपापुर मे रहिया।
छत्री मारि निछत्री कयलहुँ घोघरो ने देखल तहिता॥
हे माता गोपाल ······॥

राम रूप जहिया हम भेलहुँ नर वानर संग रहिया।
लंका जारल रावन मारल घोघरो ने देखल तहिया॥
हे माता गोपाल ······॥

कृष्ण रूप जहिया हम भेलहुँ गोकुल पुर में रहिया।
पैसि पताल काली नाग नाथल घोघरो ने देखल तहिया॥
हे माता गोपाल ······॥

बौध रूप जहिया हम भेलहुँ पुरुषोत्तमपुर रहिया।
तीन लोक में ठाकुर कहौलहुँ घोघरो ने देखल तहिया॥
हे माता गोपाल .... ॥

कलंकी रूप जहिया हम भेलहुँ सम्मल गढ़ में रहिया।
बिना पिता के जन्म हमारो घोघरो ने देखल तहिया॥
हे माता गोपाल .... ।

विष्णुक दसो अवतारक नाम ओ क्रम अछि—(१) मीन (२) कूर्म (३) कोल (४) नरहरि (५) वामन (६) परशुराम (७) राम (८) बलराम अथवा कृष्ण (९) बुद्ध तथा (१०) कल्कि।

शंकराचार्य आठम अवतार मे कृष्णक वर्णन कयलनि अछि। मैथिली लोक गीतक दशावतार वर्णन मे सेहो आठम अवतार कृष्णे कहल गेल छथि। कल्कि पुराणक अनुभागवतक भविष्य खंडक द्वितीय अंश मे कल्कि स्तव आयल अछि। एहि स्तव मे दसो अवतारक वर्णन अछि। एहिठाम आठम अवतार मे बलराम कें राखल गेलनि अछि। वर्णरत्नाकरो मे आठम अवतार हलीराम कहल गेल छथि। प्रायः ई पूर्व भारतक परम्पराक दशावतार-धारणा छल। तें जयदेवो तकर अनुसरण कयलनि। अन्यथा राधा कृष्णक प्रेमलीलाक कीर्त्तन करितो, 'यदि हरि स्मरणे सरसंमनो' क आधार रखितो आठम अवतार मे कृष्ण कें नहि राखि बलराम कें कियेक रखितथि? कृष्णक दशाकृतिक उल्लेख करैत नमस्कार करैत छथि—

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥

कृष्णका दस अवतारक वर्णन तँ कयलनि किन्तु कृष्णें कें ओहि दशावतार मे स्थान नहि देने छथि।

एकटा बात और ध्यान देबाक योग्य अछि। शंकराचार्य कल्कि अवतार मे कहैत छथि —

'दुरापार संसार संहारकारी भवत्यश्ववारः कृपाण प्रहारी।
मुरारिर्दशाकार धारीह कल्की करोतु द्विषां ध्वंसनं वः स कल्की॥

कलि पुराण मे कलि कें कहल गेलनि अछि—

'अधुना कलिकुल नाशावतारो बौद्ध पाषंड म्लेच्छादीनां च।'

अवश्ये एहि में पश्चिमक म्लेच्छ जातिक आक्रमण ओ आंतरिक बौद्ध धर्म एवं पाषण्ड सँ त्रस्त-व्यस्त भारतक संकेत भेटैत अछि। जयदेवक समय मे म्लेच्छ-यवनक आक्रमण सघन भऽ गेल छल। समस्त उत्तर भारत इस्लामी सेनाक घोड़ाक टाप सँ आक्रान्त होइत जा रहल छल। अतः जयदेव कलि कें कहलथिन---

म्लेच्छनिवह निधने कलयसि करवालं।
धूमकेतु मिव किमपि करालं।
केशवधृत कलि शरीर जय जगदीश हरे॥

कलि अवतार मे युग-सन्दर्भक संयोजन आगहुँ चलैत रहल। से जगज्ज्योतिर्म्मल्लक कलि वर्णन देखला सँ स्पष्ट भऽ जायत। जगज्ज्योतिर्म्मल्ल कलि-वर्णन मे यवन ओ सुरतानक वध कें पराक्रमक कार्य मानलनि अछि। यवन सुरतानक उत्पीडन सँ संत्रस्त हिन्दूजनमानस कें त्राण दिअयबाक कार्य कलियुगक अवतार कलि सँ सम्पादनीय मानल गेल। तें समेकित दशावतार-वन्दना-गीत मे जगज्ज्योतिर्म्मल्ल कहलनि अछि—

'मारल कलकि सकल सुरताने।'

एवं कलि-वर्णन मे कहलनि अछि—

उग्र प्रतापे यवन कुलमारि।
संतक संकट लेल उबारि॥

जगज्ज्योतिर्म्मल्लक समकालक तीन-चारि शताब्दी धरिक जनमानस मे सुरतान ओ यवन-विनाश अवतारहि सँ सम्भव मानल जाय लागल छल। अतः कोनो यवन सुलतान कें मारनिहार वा पराजित कयनिहार हिन्दू राजा अवतारी मानल जाय लगैत छल। उमापतियो अपन आश्रयदाता हिन्दूपति हरिहरदेव कें 'यवनउच्छेदन' करबाक उपलक्ष्य मे विष्णुक दशमावतार विशेषण सँ विभूषित कयलनि।

'दशावतार नृत्यम्' मे दोसर गीतक रूप मे जयदेवक दशावतार स्तुतिक गीत राखि कऽ जगज्ज्योतिर्म्मल्ल स्वयं स्पष्ट कऽ देलनि अछि जे 'दशावतार नृत्य'क

प्रेरक मूल स्रोत जयदेवे थिकथिन। अवतारक नाम, रूप, कार्य, महिमा आदि मे ओ पूर्णतः जयदेवानुयायी छथि। जगज्ज्योतिर्म्मल्लक प्रेरणा-विन्दु जयदेवक दशावतार स्तुति मे रहितो ओ प्रत्येक अवतारक वर्णन मे स्वतन्त्र वृत्तिक परिचय देलनि आ से उचितो छल। कारण जाहि अवतारक वर्णन जयदेव एकटा श्लोक मे कयने छलाह तकरा जगज्ज्योतिर्म्मल एकटा पूर्ण गीत मे कयने छथि। अतः स्वभावतः हुनका जयदेवक भाव कें पल्लवित करऽ पड़लनि। अतः कवि अन्यत्र सँ उपलब्ध तथ्य अपन दशावतार वर्णन मे जोड़ि देलनि अछि। ओ तथ्य सभ कतऽ कतऽ सँ लेल गेल तकर आकलन अनुसंधानक भिन्ने वस्तु थिक।

जगज्ज्योतिर्म्मल्ल दशावतार विषयक गीत कें नृत्य सँ सम्बद्ध कयलनि ताहूमे प्रायः 'गीत-गोविन्दे' क प्रेरणा प्रभाव छल। विद्वान लोकनिक विचार छनि जे 'गीत-गोविन्द' क गायने नहि, अभिनयो होइत छल। ओहि मे दशावतार एक अंशमात्र रहैत छल होयत। जगज्ज्योतिर्म्मल्ल जयदेवक दशावतार-स्तुति कें पूर्ण पल्लवित कऽ स्वतन्त्र अभिनयात्मक नृत्यक स्वरूप प्रदान कयलनि।

मैथिली साहित्य राधा-कृष्णक केलि-विलास, नायक-नायिकाक प्रेमव्यापार शिव-पार्वतीक लोकायत्त आलौकिक लीला, शिव ओ शक्तिक स्तुति ओ महिमा-वर्णन सँ परिप्लावित रहल अछि। 'दशावतार नृत्यम्' ओहि घेराबन्द सीमा-छीमा सँ बाहर आबि, मुक्त भऽ नवीन विषय-वस्तुक अभिनव प्रयोग थिक। कविक नवरश्मि सन्धानी नवीन दृष्टिक परिणाम थिक। तें साहित्यक इतिहास मे सर्वथा नवीन, महत्त्वपूर्ण ओ विशिष्ट स्थानक स्वाभाविक अधिकारी बनि जाइत अछि 'दशावतार नृत्यम्'।

तँ प्रस्तुत अछि रसास्वादन हेतु जगज्ज्योतिर्म्मल्लक नवप्रस्तुत 'दशावतार नृत्यम्।'

दशावतार नृत्यम्

केदार मालव ॥ चो॥

प्रथम हि गुरुपद लेब अराधि।
सगण सहित शिव भगतिहि साधि॥
आध आँग गिरिजा शिर गंग।
चन्द्र तिलक करु भूषण भुजंग॥
शिव सोहाव एहु नृत्य भाव।
नृप जगजोतिमल्ल भगति गाव॥

स रि ग म प ध नि सास्सः।
स नि ध प म ग रि सः॥
थेइ थेइ थेइ ता तथइ थेइ थेइ।
ता थेइ ता तथेइ ता थै थे थन गण था॥१॥

पद्धडिया॥ पञ्चताल॥

प्रलय पयोधिजले धृतवानसि वेदं
विहित वहित्र चरित्रम खेदं।
केशव धृत मीन शरीर जय जगदीश हरे॥
क्षितिरति पूततरे तव तिष्ठति पृष्ठे
धरणि धरण किण चक्र गरिष्ठे
केशव धृत कच्छप रूप जय जगदीश हरे॥
वसति दशन शिखरे धरणी तव लग्ना
शशिनि कलंक कलेव निमग्ना
केशव धृत शूकर रूप जय जगदीश हरे॥
तव कर कमलवरे नख अंगुल शृङ्गं
दलित हिरण्यकशिपु तनु दृप्तं
केशव धृत नरहरि रूप जय जगदीश हरे।
छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत वामन
(पद नख नीर जनित जन पावन)
केशव धृत वामन रूप जय जगदीश हरे॥
क्षत्रिय रुधिर मये जगदपगत पापं
स्नपयसि (पयसि) शमित भव तापं
केशव धृत भृगुपति रूप जय जगदीश हरे॥
वितरसि दिक्षुरणे दिव्य(क्व)ति कमनीयं
दशमुख मौलि बलिं रमणीयं
केशव धृत रघुपति रूप जय जगदीश हरे॥

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं
हलहति भीति मिलित यमुनाभं
केशव धृत हलधर रूप जय जगदीश हरे॥

निन्दसि यज्ञ विधेरहह श्रुति जातं
सदय हृदय दर्शित (पशु) घातं
केशव धृत बुद्ध शरीर जय जगदीश हरे॥

म्लेछनिवह निधने कलयसि करवालं
धूमकेतुमिव किमपि करालं
केशव धृत कल्कि शरीर जय जगदीश हरे॥

श्री जयदेव कवि (वे) रिदमुदित मुदारं
शृणु सुखदं शुभदं भवसारं
केशव धृत बुद्ध शरीर जय जगदीश हरे॥२॥

भैरवी॥ ए॥

वेद उघरि लेल मच्छ शरीरे।
कमठ पीठि देल धरणि सुथीरे॥
कोल धएल मही दशन उपरी।
हिरण विदारण नखे नरहरी॥
वावन बलि छलि राखल पताले।
सहस्रबाहु भृगु नन्दने विभाले॥
दशमुख दलन कएल रघुनाथे।
बलदेव दैत छेदल हल हाथे॥
यज्ञजीव वध बुद्ध न माने।
मारल कलकि सकल सुरताने॥
दश अवतार हरल महि भारे।
नृप जग जोति शिव चरण अधारे॥ ३॥

विभास ॥ खर्ज ॥

जखने महितल जल परिपूर।
ते जले बहिकहु वेद गेल दूर॥
ते लेल मीन अवतार॥ ध्रु॥
मुनि द्विज मुखे कएल मख परचार।
सुरगण का भेल तेहि अधार॥
ई मारि परिनील(न?)ति जे जन जान।
तकरा हमर भगति हो ज्ञान॥
पीत वसन गिम रह वनमाल।
चारि भुजा दुहु नयन विशाल॥
नृप जग जोति भननीय गेयान।
प्रथमहि मीन रूप कयल तराण॥ ४॥

मालव ॥ लं ॥

कमठे पीठि महि धरए संभारि।
नद नदी सागर गिरि अति भारि॥
ते किण चक्कित सुन्दर देह।
जनि शशि विम्ब कलंक रेह॥
से जञो कौतुक अंगुलि चाल।
चौदह भुवन काँप ताहि काल॥
कि कहब अद्‌बुद तहिक सरूप।
सब दुख हर हरि कमठहि रूप॥
नृप जग जोति भन अपन गेयान।
ए विधि दोसर कमठ रूप जान॥ ५॥

मालव ॥ प्र ॥

मेघ वरण अति विपुल तनू।
आदि वराह जनम लेल जनू॥
ए विधि विलसथि कोल शरीर॥ ध्रु॥

दशन लाए महि धएल जतने।
कोटि सुरुज जनि उगल गगने॥
तेहि महि विलसथि कत कत गिरी।
तरुअर नद नदी अओ कत पुरी॥
सुर नर मुनिवर रह ओहि ठाम।
नव खण्ड मध्य मेरु अभिराम॥
नृप जग जोति भन शिवपद सारे।
तेसरे कोल रूप लेल अवतारे॥६॥

आसावरी॥ ए॥

पहलादक संकट भेल जखने नरहरि भेल परसने।
हिरणकसिपु तनु नखहि विदारल भगति मुदित भए मने॥
ए नरहरि सदय हृदय तोहे देवा॥ ध्रु॥
विकट भयंकर जोति महा तनु गज रतन सबे जने।
दसन वज्र सन नख अति अदबुद बरिसत अगिनि नयने॥
जहा जहा संकट पाव भगत जन ए विधि करथि उधारे।
दानव दुष्ट संहरि सदा ओहे दूर करथि महि भारे॥
पीत वसन गरुडासन सुन्दर कौस्तुभ भूषण वनमाली।
शंख चक्र सारंग गदाधर सन्तजनक उपकारी॥
चारिम रूप नरहरि जग व्यापित सबहिक पुरथु आसे।
नृप जगजोति भगति रसे गावए जनमे जनमे शिवदासे॥७॥

केदार॥ प्र॥

अदबुद वावन दुजवर रूप।
वेद कएल वस दानव भूप॥
बलि बल छलन कएल एहि रूप॥ध्रु॥
विधिहुते सरस पढ़थि ओहे वेद।
सुनितहि सबक होअ भव छेद॥

तीनु भुवन लेल तिहुहु चरणे।
ए विधि कएल दैत गंजने॥
हाथ कमण्डलु ओ जपमाल।
कौपिन वसन सोह बटु बाल॥
पंचम रूप जोग नहि पाव।
नृप जगजोति बुझाबए भाव॥ ८॥

कामोद॥ चो॥

परशुराम ओहे भृगुकुल मण्डन।
क्षत्रिय सकल कएलहु निखण्डन॥
कौतुके तोडल गणपति दन्त।
सहस्रबाहु के कएलहि अन्त॥
रिपु रुधिरोदके सरवर भेल।
तसु अञ्जलि पितृ तर्पण देल॥
अस्त्र शस्त्र सवे सिखाओल हरे।
तहिक समान होएत के परे॥
हरिक महिमा के जग जान।
छठम रूप जगजोति बखान॥ ६॥

धना श्री॥ ए॥

जानकि पति ओहे सिरि रघुनाथे।
तात वचन लेल नत कए माथे॥
रघुकुल विमल कमल परगास।
सुर नर सबका हरथि तरास॥ ध्रु॥
सन्त सरूप लेल वनवास।
धीर वीर वर सत्व निवास॥
कपिदल साजि सकल गढ लंका।
दानव दल सवे कएल सशंका॥

दशमुख दश दिश जे बलि देल।
ते दिगपाल मुदित मन भेल॥
दशरथ नन्दन सातम रूप।
अहनिश चिन्तय जगजोति भूप॥ १० ॥

कोलाव ॥ चो ॥

कादम्बरि वस हलधर रूप।
युद्ध महाविर कहिअ अनूप॥
मुठ्काञे मारि मुष्टिक जिव लेल।
प्रलम्ब छाड मोडि सानन्द भेल॥
नील वसन तनु फटिक समान।
हल आयुध रेवती रस जान॥
जहा जहा संकट करथि तराणे।
कौतुके दैत के लेल पराने।
आठम रूप श्री हलधर नाम॥
नृप जगजोति शरण परिणाम॥ ११ ॥

नाट ॥ चो ॥

भाद्र दुआदसि पख उजियार।
तेहि अवसर भेल बुध अवतार॥
काम कोह लोभ सबे मन जीति।
धरए नियम यम परम सुरीति॥
सिर मुण्डित अओ वसन कषाय।
ध्यान परायण जिनमत पाय॥
धरम अहिंसा दयामय भाव।
यज्ञ जीव बध मनहु न लाव॥
नृप जगजोति कह नओम अवतार।
हरिक रूप ओहे हर महि भार॥ १२ ॥

कौशिक ॥ ए ॥

कलिक अन्त अधरम परिपूर ।
कलकि सरूपे कएल सबे दूर ॥
कर करवाल तुरगवर साजि ।
पूहवि वल रण कैए विराजि ॥
उग्र प्रतापे यवन कुल मारि ।
संतक संकट लेल उवारि ॥
कतहु भयंकर कतहु कृपाल ।
संभल गाम लेल अवतार ॥
कृत जुग हरिक चारि अवतार ।
ते परि त्रेता दुइ अवतार ॥
द्वापर तीनि लेल तनु हरि ।
कलिजुग कलकि धरम उधरी ॥
दशहु रुपे पाइअ एक धाम ।
नद नदी सबे भज सागर ठाम ॥
ए विधि हरि लेल दश अवतार ।
नृप जगजोति भव करथु संतार ॥ १३ ॥

कानरा ॥ लघुशेखर ॥

नाद गान अओर तान ठाम ठाम हृद्यमान ।
गद्य पद्य अर्थ भाव ताल वद्ध कैए गान ॥
शंख शुषिर कंश वंश मुरज तन्त्रि विविध भेद ।
ब्रह्मा विष्णु शंभु आदि देव सेव नाद वेद ॥
सप्तराग त्रीणि गाम मूर्छनाभिराम धाम ।
मन्द मध्य ताल थान वासभेद धरिए नाम ॥
अर्थ धर्म भुक्ति मुक्ति एहि सकल साधिअए ।
पाप जीति परम नीति शंभु शरण पाइअए ॥
हस्त चरण अंग चारि फेरि फेरि नाचिअए ।
भूप जगजोति मल्ल सुगत उगत गाइअए ॥१४॥

कल्याण ॥ रूप ।

महादेव देवाधि देव देवहि सेव ॥ ध्रु ॥
निरगुण सगुण तिनहु गुणमय हरण पुरण पालन परम ।
अशरण शरण जगत वन्दन ।
तोहहि निरंजन अओ जनरंजन ॥
क्षिति जल तेज पवन गगनहि मिलि,
एहि सब भोग तोहहि पए तारिअ ।
नृप जग जोति जोरि कर गोचर ।
तोहि छाडि दोसर न केओ ईशर ;। १५ ॥

मालव ॥ कहर ॥

दश रुपे हरि लेल अवतार ।
तहिक कृपान्वे रहल संसार ॥
अन देखलह हे जगजाना ॥ ध्रु ॥
विधि हरि हर ओहे तीनु रूप ।
बूझि विचारह एक सरूप ॥
वर अभय अओअहे पए देअ ।
भगतक भाव सदए भए लेअ ॥
के नहि चिन्तए तसु (पए) चरण ।
जाहि बिना नहि (हो) भय हरण ॥
नृप जग जोति हरि भगतिहि भूल ।
जनम मरण दुख कर मोर दूर ॥ १६ ॥
दशावतार नृत्येन राज्ञोमल्ल मेघताम् ।
प्रजाः प्रमुदिताः सन्तु पृथ्वी शस्य प्रपूरिता ॥

इति श्री शिवचरण कमल मधुकर श्री श्री जगज्ज्योतिर्म्मल्ल देव विरचितं दशावतार नृत्यं सश्लोक गीतम् ।

॥ इति शुभम् ॥

षोडश गीतम्

जगज्ज्योतिर्म्मल्ल अभिनयक क्षेत्रमे अभिनव नाट्य-प्रयोग करबामे विशेष अभिरुचि रखैत छलाह। ओही अभिरुचिक परिणाम थिक प्रस्तुत 'षोडश-गीतम्'। एहि कृतिक तीन गोट हस्तलेख काठमाण्डूक राष्ट्रिय अभिलेखालयमे एखन धरि दृष्टिगोचर भेल अछि। पहिल अछि 'नानाराग गीत संग्रह' (सूची क्रमांक १/३३८)। एहिमे बहुतो गीत संकलित अछि, जाहिमे सोलह गोट गीतक एकटा समूहक अन्तमे कहल गेल अछि 'इति सम चारि सप्तताल गण्डल गीतानि समाप्तानि'। दोसर हस्तलेख 'भाषा संगीतम्' (सूची क्रमांक ३/६७) नामक अछि। एकरा अन्तमे कोनो समाप्ति वाक्य नहि अछि। एहूमे गीत सोलहे गोट अछि। दुहू हस्तलेखमे आरम्भक नमस्कार वाक्य समान अछि। दुहू संग्रहमे समान गीत; समान रागादिक निर्देश ओ समान क्रममे संकलित अछि। प्रथम गीतकेँ नान्दीगीत कहल गेल अछि। दोसर गीतक निर्देश अछि 'झंपेन प्रवेश गीतम्'। एहिमे नर्त्तक गणक वाद्य, नृत्य, गीत, तालादि सहित भाव-प्रदर्शनक पटुता-वर्णन तथा एतद् द्वारा भगवद्गुणानुवाद करबाक उपदेश अछि। तत्पश्चात् उक्ति-प्रत्युक्तिक छओ गोट गीत-युगल अछि। पहिल गीत-द्वय स्त्रीक उक्ति, द्वितीय गीत-द्वय पुरुषक उक्ति अछि। एवं क्रमे बारहम गीत धरि व्यवस्थित अछि। प्रत्येक गीत-युगलमे पहिलकेँ 'गण्डल गीत' ओ दोसर गीतकेँ 'नचारी गीत' कहल गेल अछि। प्रत्येक गीतमे क्रमशः निर्देश अछि 'स्त्रिया उक्ति गण्डल गीतम्'— 'तदुक्ति नचारी गीतम्'; 'पुरुषस्य गण्डल गीतम्'— 'तदुक्ति नचारी गीतम्'। तेरहमसँ सोलहम गीतकेँ क्रमशः 'शान्ति रस गीतम्' 'तदुक्ति नचारी गीतम्' 'भक्तिरस गीतम्' 'भक्तिरस नचारी गीतम्' कहल गेल अछि।

दुहू संग्रहक अन्तमे परिशिष्ट रूपमे गीतक चरण सभक सूची अछि। 'नानाराग गीत संग्रह'मे तँ नहि, किन्तु 'भाषा संगीतम्'मे सूचीसँ पहिने नेवारी भाषामे एकटा टिप्पणी सेहो देल गेल अछि। एहि सूचीमे सात गोट रागक उल्लेख अछि—कोराव, नाट, वराली, जयतश्री, विभास, मालव एवं पहडिया। प्रत्येक रागक संग 'वाधा' शब्द तथा भिन्न-भिन्न तालक उल्लेख अछि। प्रत्येक

रागमे गीतक चारि-चारि गोट चरण देल अछि। प्रत्येक चरण द्वादश मात्रिक अछि। परन्तु भाव ओ अन्त्यानुप्रासक दृष्टिएँ सर्वथा भिन्न-भिन्न अछि। ई सब की थिक से बूझि नहि पड़ैत अछि, किन्तु तेसर हस्तलेखसँ एकर किछु रहस्य फूजैत अछि।

तेसर हस्तलेख (सूची क्रमांक-४/२१०५) केर नाम अछि 'षोडश गीतम्'। एहूमे अन्यान्य अतिरिक्त उपादानक संग उपरिचर्चित दुहू हस्तलेखक सोलहो गीत यथारूप, यथाक्रम सजाओल अछि तथा अन्तमे सतरहम संख्यक नवीन गीत अछि। परन्तु 'षोडश गीतम्' गीत-संग्रहक रूपमे नहि अपितु नाटकक रूपमे अछि। एहि ठाम देखल जाइछ जे गोपी ओ कृष्णक प्रेम-लीलाक संक्षिप्त कथा-वस्तुकेँ मैथिली गद्य-संवाद, संस्कृत श्लोक एवं रागताल बद्ध मैथिली गीतक माध्यमसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि। 'षोडश गीतम्'मे पूर्वोक्त सोलहो गीतक निर्देशमे किछु परिवर्त्तन कऽ देल गेल अछि। 'स्त्रियाउक्ति'क स्थानमे 'गोप्युक्ति' ओ 'पुरुषस्योक्ति'क स्थानमे 'कृष्णस्योक्ति' निर्देश अछि। तहिना 'तदुक्ति नचारी गीतम्'मे 'तदुक्ति' केँ स्पष्ट कयल गेल अछि जे कृष्णक उक्ति थिक वा गोपीक तथा ककरा प्रति कहल गेल अछि। सब गीतक अन्तमे 'गीतार्थं श्रावयति' निर्देश अछि। एकटा सतरहम संख्यक गीत अछि जे पूर्वोक्त दुहू हस्तलेखमे नहि अछि। अन्तमे दुइ गोट संस्कृत श्लोकक पश्चात् परिशिष्ट रूपमे सात गोट गीत पुनः देल गेल अछि जकर शीर्षक अछि 'एतेषां गण्डल गीतानां वाढामाह'। 'षोडश गीतम्'क विषम संख्यक गीत १, ३, ५, ७, ९, ११, १३ ओ १५ केँ गण्डल गीत तथा सम संख्यक गीत २, ४, ६, ८, १०, १२, १४ ओ १६ केँ नचारी गीत कहल गेल अछि। पहिल केँ छोड़ि शेष सातो गण्डल गीत, सैह 'एतेषां गण्डल गीतानां वाढामाह' कहि कऽ वास्तवमे दोहराओल गेल अछि। मूल भागमे तथा एहि परिशिष्ट भागमे जे सातो गीत अछि तकर तुलना कयने स्पष्ट होइत अछि जे मूलमे सातो गीत अष्टपदी अछि परन्तु परिशिष्टमे द्वादश-पदी अछि। मूल भागक गीतक प्रत्येक दुइ चरणक पश्चात् एतऽ एकटा कऽ नव चरण जोड़ि देल गेल अछि। एहि तरहेँ प्रत्येक गीतमे चारि-चारि चरण बढ़ि गेल छैक। एही बढ़लाहा चरण सभक सूची दुहू हस्तलेखक अन्तमे देल छैक। 'बाधा' वा 'बाढा' शब्देँ यैह बढ़ोतरीक चरण सूचित होइत अछि। मूल भागक प्रत्येक गण्डल गीतक राग निर्देशमे 'टुटा' शब्दक प्रयोग अछि मुदा परिशिष्टमे 'बाढ़ा' शब्दक प्रयोग भेल अछि। 'टुटा' 'बाढ़ा' कोनो गान प्रक्रिया छल जकरा सम्बन्धमे विशेष अनुसन्धान अपेक्षित अछि।

तीनू हस्तलेखक तुलना कयला पर ई धारणा बनैत अछि जे पहिल दुनू प्रति रचनाक प्रारूप वा ड्राफ्ट थिक तथा अन्तिम 'षोडश गीतम्' ओकर

अन्तिम नाट्य-रूपान्तरण थिक। वास्तवमे एहि रचनाकेँ नाटक नहि, अपितु नृत्य-नाट्य वा संगीत-नाट्य कहब समीचीन होयत।

'षोडश गीतम्' नृत्य-नाट्य आरम्भ होइछ नान्दीगीतसँ। नान्दीगीतक पश्चात् नृत्यक (नर्त्तक) वृन्दक पृष्ठ भागमे स्थित भऽ कऽ दुइटा नान्दीश्लोकक पाठ कयल जाइछ। नान्दीपाठ के करैत अछि, से स्पष्ट नहि अछि। मुदा एकरा बाद झमकि कऽ नर्त्तकक प्रवेश गीत गाओल जाइछ आ नर्त्तकगण मञ्च पर प्रवेश करैत अछि। नर्त्तक सब प्रायः कृष्ण ओ गोपीक वेशमे रहैछ, तेँ प्रवेश करितहि कृष्ण-गोपी संवाद आरम्भ भऽ जाइछ। एहि क्रममे मैथिली गद्य-संवाद ओ संस्कृत श्लोकक माध्यमसँ भक्तपुर नगर, राजा जगज्ज्योतिर्मल्ल, हुनक वंश एवं कृति आदिक प्रशंसा कयल जाइछ। सामान्यतः ई सब विषय प्रस्तावनामे सूत्रधार ओ नटी द्वारा कहल जाइत अछि। एहि ठाम प्रस्तावना ओ सूत्रधार-नटी नहि अछि, मुदा प्रस्तावना ओ सूत्रधार-नटीक समस्त व्यापार कृष्ण ओ गोपी द्वारा सम्पादित होइत अछि। ई एहि नाट्यक सर्वथा नवीन विशेषता थिक।

अतःपर गोपी-कृष्णक प्रेमालाप आरम्भ होइछ। सबसँ पहिने गोपी एकटा गण्डल गीतमे अपन मनोभाव व्यक्त करैत छथि। पुनः गद्य-संवाद कहि नचारी गीतमे अपन भाव कहैत छथि। तदुपरि संस्कृत श्लोक कहैत छथि। एकरा उत्तरमे कृष्णो एकटा गण्डल गीत ओ नचारी गीत गाबि संस्कृत श्लोक कहैत छथि। एवम् क्रमे बारहम गीत धरि उत्तर-प्रत्युत्तर चलैत अछि। तेरहम ओ चौदहम गीत कृष्णक आग्रह पर गोपी गबैत छथि जकरा 'शान्तिरस'क क्रमशः 'गण्डल' ओ 'नचारी' गीत कहल गेल अछि। पन्द्रहम ओ सोलहम गीत 'भक्तिरस'क 'गण्डल' ओ 'नचारी' गीत कहल गेल अछि, जकरा सम्भवतः मंचस्थ समग्र पात्र मीलि कऽ गबैत अछि। एहि दुहू गीतमे शिवक वन्दना अछि। अन्तिम, सतरहम गीतकेँ 'कहरा'कहल गेल अछि जाहिमे संसारक अनित्यता ओ शरीरार्थक भाव व्यक्त कयल गेल अछि। अन्तमे दुइ गोट संस्कृत श्लोक अछि जकरा भरत वाक्य कहल जा सकैछ।

एहि नृत्य-नाट्यमे गीत ओ श्लोक मैथिली गद्य-संवाद द्वारा सम्बद्ध कयल गेल अछि। प्रत्येक गीतक अन्तमे 'गीतार्थं श्रावयति' निर्देश देल गेल अछि। प्रायः गीत गओलाक बाद ओहि गीतक भाव गद्यमे कहबाक परिपाटी छल हो, जे सम्बद्ध पात्र वा कोनो निरपेक्ष पात्र द्वारा कहल जाइत हो।

जगज्ज्योतिर्मल्लक अभिनयक क्षेत्रमे नूतन प्रयोगक निदर्शन 'षोडश गीतम्'मे भेल अछि जकर रचना ओ कुतूहलवश कयने छलाह। एकटा

आरम्भिक श्लोकमे कहल गेल अछि जे 'राजा जगज्ज्योतिर्मल्ल नाट्य-विधिक विशेषज्ञ छथि। आ एहिसँ पूर्व मदालसापरिणय एवं कुञ्जविहार नाटकक निर्माण कऽ चुकल छथि। परन्तु ई गीतमय कृति कुतूहलवश कयल । भरतोक्त नाट्य विषयक सूत्र लक्षण बहुतो अछि तथापि परमेश्वर प्रीत्यर्थ 'षोडश-गीतम्'क निर्माण कयल जाहिमे ताल, भिन्न, टुटा, वाढा इत्यादि भेदक प्रयोग भेल अछि।'

एहि नाट्यकृतिमे कथावस्तुकेँ नहि अपितु ओकर प्रस्तुतिकेँ विशेष महत्त्व देल गेल अछि। एहि प्रस्तुतिमे संगीत पक्ष विशेष प्रबल रहल अछि। संगीतमे तीन वस्तुक स्थिति मानल गेल अछि—गीत, वाद्य ओ नृत्य—'गीतं वाद्यं नर्त्तनं च त्रयं संगीतमुच्यते'। 'षोडश गीतम्'मे तीनू वस्तु विद्यमान छैके, संगहि किछु औरो तत्त्व छैक जाहिसँ एहिमे नाटकीयताक समावेश भऽ गेल छैक।

दोसर गीतमे, एहि कृतिक प्रस्तुतिक संकेत देल गेल अछि जे गीत, वाद्य ओ नृत्य तीनूकेँ संयुक्त कऽ तालक संग कर द्वारा भाव प्रदर्शन कयल जाइछ। एहि प्रकारेँ कतोक युक्तिसँ कतोक प्रकारक भाव बुझाओल जाइछ—

गीत वाद्य नृत्य एहे तिनिहि मिलावे रे।
ताल सहित करे भाव देखावे रे॥
कत भाव बुझावे कत जुगुति बनावे रे।
हरिहर गुण किछु सबे मिलि गावे रे॥

गीतक संवादात्मक शैली, संवाद-प्रयोग, कथानकक संक्षिप्त विन्यास ओ कथानकक अनुसार पात्रक संयोजनसँ नाटकीयता आबि गेलैक अछि। नाट्य-शास्त्रक आधार पर यदि एकरा देखल जाय तँ प्रायः रूपकक कोनो एहन भेद नहि अछि, जाहिमे एकरा स्थान देल जा सकय। उपरूपकक विभिन्न प्रभेदमे 'रासक' ओ 'हल्लीसक'क लक्षणसँ एकर समता देखाओल जा सकैत अछि। साहित्य दर्पणमे कहल गेल अछि—

रासकं पंचपात्रं स्यात् मुखनिर्वहणान्वितम्।
भाषा विभाषा भूयिष्ठं भारती कैशिकी युतम्॥
असूत्रधारमेकांकं सवीथ्यंगं कलान्वितम्।
श्लिष्ट नान्दी युतं ख्यातनायिकं मूर्खनायकम्॥
उदात्त भाव विन्यास संश्रितं चोत्तरोत्तरम्।
इह प्रतिमुख सन्धिमपि केचित् प्रचक्षते॥

रासकमे मूर्ख नायकक विधान रहबाक कारणे 'षोडश गीतम्'कें 'रासक' मानबामे बाधा अछि। अभिनवगुप्त रासकके अनेक नर्तकी-योज्य मानैत कहने छथि—

अनेक नर्तकी योज्यं चित्रताल लयान्वितम्।
आचतुःषष्ठि युगलात् रासक मसृणोद्धतम्॥

रामचन्द्र-गुणचन्द्र नर्तकीक संख्या ओ नृत्य-प्रकारक निर्देश दैत छथि—

षोडश द्वादशाष्टौ वा यस्मिन् नृत्यन्ति नायिकाः।
पिण्डीबन्धादि विन्यासैः रासकं तदुदाहृतम्॥

उपर्युक्त दुहू लक्षणमे अनेक स्त्री द्वारा नृत्य-गीतादिक प्रयोग-विधान अछि परन्तु नायकक सम्बन्धमे मौनावलम्बन कयल गेल अछि। भोज, रासकके हल्लीसकेक समान मानैत छथि—

तदिदं हल्लीसकमेव तालबंध विशेष युक्त रास एवेत्युच्यते।

वस्तुतः 'हल्लीसक' केर जे लक्षण अछि ताहिसँ रासकक लक्षणमे किञ्चिते अन्तर पड़ैत अछि। जेना 'अभिनव भारती'मे कहल गेल अछि—

मण्डलेन तु यन्नृत्यं स्त्रीणां हल्लीसकमिति स्मृतम्।
एकस्तत्र तु नेता स्यात् गोपस्त्रीणां यथा हरिः॥

एकरहि समर्थन 'शृंगार प्रकाश' ओ 'भावप्रकाशन'मे कयल गेल अछि। तथापि भावप्रकाशनमे एकरा 'खण्डताल-लयान्वित' कहल गेल अछि। रामचन्द्र-गुणचन्द्र सेहो उपर्युक्ते परिभाषा दैत छथि—

यन्मडण्लेन नृत्तं स्त्रीणां हल्लीसकं तु तत् प्राहु।
तत्रैको नेता स्याद् गोपस्त्रीणामिव मुरारिः॥

साहित्य-दर्पणमे एहि लक्षणके और पल्लवित करैत कहल गेल अछि—

हल्लीसक एक एवांकः सप्ताष्टौ दश वा स्त्रियः।
वागुदात्तैक पुरुषः कैशिकी वृत्तिरुज्वला॥
मुखयान्तिकी तथा सन्धी बहुताललयस्थितिः॥

रासकक मूर्ख नायकत्वक लक्षणक परित्याग कऽ तथा भाषा-विभाषा-भूयिष्ठ ओ असूत्रधारत्वक संग समस्त मुख्य लक्षणके हल्लीसक केर लक्षणक संग मिला देल जाय तँ जे उपरूपकक स्वरूप बनत तकर अनुरूप अछि 'षोडश गीतम्'। एहूमे अंक विभाजन नहि अछि तें एकहि अंक मानल जायत।

प्रस्तावना नहि रहने सूत्रधारक अभाव अछि। संस्कृत ओ मैथिलीक समान रूपसँ प्रयोग भेल अछि। एक गोट पुरुषपात्र, नायकक रूपमे कृष्ण छथि। ओ नायिका गोपी छथि मुदा एकसरि नहि, अनेक सखीक संग। तेँ एकसँ अधिक स्त्री-पात्री होयब स्वाभाविक। आरम्भेमे मंच पर नर्त्तक लोकनिक प्रवेश-सूचना अछि जे कृष्ण ओ गोपीक अभिनय करैत अछि। ओ सभ अभि-नयक क्रममे संवादात्मक गीतक गायन ओ ओहि संग नृत्यात्मक भाव-प्रदर्शन करैत छल से सहज अनुमेय अछि।

अतः कहि सकैत छी जे 'षोडश गीतम्' रासक ओ हल्लीसकक मिश्र रूप थिक।

जगज्ज्योतिर्मल्लक ई कृति पहिलबेर चर्चित-मुद्रित भऽ रहल अछि। मैथिली काव्य-रसिक ओ प्राचीन साहित्यक मनस्वी अनुसन्धाता गणकेँ नूतन सामग्री देखि सन्तोष अवश्य होयतनि।

प्रस्तुत कृतिकेँ रिसर्च-प्रक्रिया जन्य पाठान्तर-भारसँ मुक्त राखल गेल अछि। तीनू मूल हस्तलेखमे अनेक पाठान्तर, अपपाठ, भ्रान्ति ओ अशुद्धि अछि। आत्मविवेकसँ कोनहु एक रूपकेँ ग्रहण कऽ पाठ निर्धारण कयल गेल अछि। भविष्यमे एकर समुचित संशोधन ओ संवर्द्धनक पर्याप्त अवकाश छैक।



षोडश गीतम्

श्रीगुरुभ्यो नमः ।। श्रीपरदेवतायै नमः ।। श्रीसावरणार्द्धनारीश्वर नृत्यानन्दस्वरूपेभ्यो नमः ।।

प्रथमतो नान्दीगीतम् ।। गण्डलं ।। राजविजयरागे ।। एकताले ।।

नोद ब्रह्म हर जह्नि कएल परगास,
भक्तजने महि कएल तकर विकास ।।
जह्निक ललाट सोह अमिअ किरणे,
मङ्गल दायक जह्नि भज सब जने ।।
कम्बु कोइँ सरसिज सम जसु गात,
वराभय जसु हाथ वन्दिअ परात ।।
नृप जगजोति कह कर निरवाह,
पुरावथु मनोरथ त्रिभुवन नाह ।। १ ।।

नृत्यक(र)वृन्दकस्य पृष्ठे स्थित्वा नान्दीश्लोक द्वयं पठन्ति ।। तद्यथा ।।

जगज्जन-मनोभृङ्ग-मुदे मन्दाकिनी-जले ।
यस्यचूडस्थया चन्द्रकलया कमलायितम् ।।
सितोष्णीष-फणीशानः सनाल कुमुदायते ।
अशेषसिद्धिसंधाता सदा पातु स वः शिवः ।।

झंपेन प्रवेशगीतम् ।। कामोद ।। चो ।।

गीत वाद्य नृत्य एहे तिनिहि मिलावे रे,
ताल सहित करे भाव देखावे रे ।।
कत भाव वुझावे कत जुगुति वनावे रे,
हरिहर गुण किछु सबे मिलि गावे रे ।। ध्रुव ।।
ममता मोह कए होअ पचतावे रे,
नारद आदि सबे एहे मन लावे रे ।।
नृपजगजोतिमल्ल शिव पए भावे रे,
नाद पाँचम वेद पुनमत पावे रे ।। २ ।।

तद्गीतेनालङ्कारेण नृत्यक(र)ाः प्रविशन्ति ।। गीतार्थं श्रावयति ।।

गोपी, हे परमेश्वर, मोरा निवेदन, निवेदन अवधान करू ।
कृष्ण, हे प्रिये, अचिरेण कहु ।

गोप्युक्ति ॒ श्लोकः ॥

शार्दूल-चौराहि भयं न यत्र भयं न च म्लेच्छमहीपतीनाम् ।
इयं भवानी परिपालनीया चिराय भक्ताक्ष(ख्य)पुरी प्रजीयात् ॥

द्वितीय(ा) गोपी व(च)नम् ॥ हे नाथ ॒ मोराहु किछु विज्ञप्ति कान देउ ।

कृष्ण ॒ ईप्सितमेव ।

द्वितीया गोप्युक्ति ॒ श्लोकः ॥

राजा च तस्यामति चित्त शुद्धिर्गान्धर्वशास्त्रागमगामि बुद्धिः ।
कृतीजगज्ज्योतिरिति प्रसिद्धनामा जगद्व्यापि विशाल धामा ॥

कृष्ण ॒ हे रमणी गोप बालिका ॒ सेहो मोञो कहइ छञो ।

गोपी ॒ हे नाथ ॒ हमरा पूर्व तपस्या फले इहाक मधुर वाणी सुनब ।

कृष्णोक्त ॒ श्लोकः ॥

वंशे सहस्रकिरणस्य बभूव राजा ख्यातः कृती जगति यो हरसिंहदेवः ।
नेपालमेत्य वरपीठमनेन पातु नित्यार्चिता गिरिसुता तदपत्य भूपान् ॥

धन्य भक्तनगर ॒ नगरवासी लोक पुनु धन्य ॒ तथु श्रीपशुपतिचरण-कमल धूलि धूसरित शिरोरुह श्रीमन्मानेश्वरीष्टदेवता लब्ध वर प्रसाद रघुकुल तिलक श्रीमज्जगज्ज्योतिर्म्मल्ल देवक चित्त धन्य ॒ जाहि अनादि ब्रह्म भवानीक चरण तस्य राज्ञः सा भवानी कुशल कल्याणदायिनी भवतु ॥

गोपी श्लोक ॥

किन्नो वेत्ति नृपः स नाटकविधं यो निर्ममे नाटकं ॒
ख्यातं चारु मदालसापरिणयं ॒ कुञ्जेविहारं हरेः ॥
किंत्वेषोऽति कुतूहलाहृतमना गीतानि यत्कानिचि-
च्चक्रे सन्तु सभासदोप्यवहितास्तान्येव गास्याम्यहम् ॥

हे नाथ ॒ भरतोक्त सूत्र लक्षणादि नाना प्रकार अच्छ ॒ ई परमेश्वर प्रीति षोडश गीत ताल भिन्न टुटा वाढा भेद तथि गीत एक गोचर करइ छञो ॥

कृष्ण ॒ हे बल्लभे ॒ उचित ॥

गोप्युक्ति ॒ गण्डल गीतम् ॥ (कोराव) ॥ टुटा जति ॥

कान्ह चरण मन लावे ॒ किछुओ न मोहि सोहावे ॥
तोहे प्रभु सेवि न भेल ॒ जनम निफल बहि गेल ॥

मलमय की एहे देह ॽ हरि सञो करह सिनेह ।।
नृप जगज्योति एहो भान ॽ हरि छाड़ि गति नहि आन ।।३।।

गीतार्थं श्रावयति ।।

गोपी ॽ हे परमेश्वर ॽ अओरो विज्ञप्ति सुनु ।।

गोप्युक्ति ॽ नचारी गीतम् ।। कोराव ।। ख ।।

मुरली कए देल फाँस ॽ धुनि सुनि अएलहु पास ।।
अवे जनु परिहर नारी ॽ कुल मोरा जनु देह गारि ।।
चाँद कुमुद नेह दूर ॽ परशहि की नहि पूर ।।
नृपजगजोतिमल्ल वाणि ॽ मोर एक शरण भवानि ।।४।।

गीतार्थं श्रावयति ।। गोप्युक्ति ॽ श्लोकः ।।

त्रिवर्गमपि नेच्छामि किन्तु त्वत्पाद-भावनां ।
यथा सम्पद्यते साम तथा त्वं कुरु हे प्रभो ।।

कृष्ण ॽ हे गोपी हमरो वोल एक सुनु ।।

कृष्णोक्ति ॽ गण्डल गीतम् ।। नाट ।। दुटा एक ।।

वडे भागे पाइअ राही ॽ वलय देखाउल नाही ।।
तोह सनि मोरा के आने ॽ दुइ देह एक पराने ।।
जुवति जीव किए लेहे ॽ अधर सुधारस देहे ।।
नृप जगजोति बुझावे ॽ शिव सेविए सुख पावे ।।५।।

गीतार्थं श्रावयति ।।

अओरो सुनू ।।

कृष्णोक्ति ॽ नचारी गीतम् ।। नाट ।। लघु ।।

किए तोहे काँपह पहिलुक संगे ॽ जञो दुख सहिअ तञो हो पुनु रंगे ।।
हसि हेर सुन्दरि पेम पियारी ॽ करए काम केलि मोर जिव मारी ।।
कञ्चन कुच घट परसक आसे ॽ पानि पलव मोर न कर निरासे ।।
नृप जगजोति भन मने अवधारी ॽ हर परसादे वुझय दुइ चारी ।।

गीतार्थं श्रावयति ।। श्रीकृष्णोक्ति ॽ श्लोकः ।।

किं कम्पसे कुरङ्गाक्षि प्रथमे मम संगमे ।
प्राणनाथहितार्थं किं न कुर्वन्ति कुलाङ्गनाः ।।

गोपी ॽ पुरुष वचन एहने से मोञो कहइ छञो ।।

कृष्ण हे गोपाङ्गना उत्तम ।।

गोप्युक्ति ॱ गण्डल गीतम् ।। वराली ।। टुटा ठक ।।

पुरुष हृदय वड कूट ॱ परक वचने सुनि टूट ।।
नेह उपजाए तेजि जाए ॱ ताहि नहि कओनो उपाए ।।
तोहे वड रसिक सुजान ॱ पहु विनु न रह परान ।।
नृप जगजोति एहो गावे ॱ शिव पए सिनेह वढावे ।।७।।

गीतार्थं श्रावयति ।।

हे परमेश्वर ॱ ताहि उत्तर सुनु ।।

गोप्युक्ति ॱ नचारी गीतम् ।। (वराली) ।। प्र ॱ प ॱ चो ॱ ।।

कओनहु जुगुति मोरे तोहर चरण गति ॱ
सबे खन एहन मति ।।
सुनह मोर नागर प्राणनाथ ।।ध्रु।।
अपन वालभु ठाम घरिणि धरम एह ॱ
हरि सम कए राख नेह ।।
अमिय किरण विनु जहेन चकोरि होअ ॱ
दुखलि विकल घन रोअ ।।
नृप जगजोति कह कर धनि अभिलास ॱ
पुरत तोहर शिव आस ।। ८ ।।

गीतार्थं श्रावयति ।। गोप्युक्ति श्लोकः ।।

जगत्प्रसिद्धं हृदयन्तु पौरुषं हुताशनाभं हविरेव योषितः ।।
अतोऽवधेयं भवतैव यावती तयोर्विशेषस्थितिरत्र मार्दवे ।।

कृष्ण हे गोपाङ्गना ॱ हमराके कूट कहै छह ॱ मोह्न कहै छओ सुनु ।।

कृष्णोक्ति ॱ गण्डल गीतम् ।। जयतश्री ।। टुटा ।। अ ।।

धन जौवन पेलि पराई ॱ अपने शील कतहु न जाई ।।
कागे कोइल आनि पढावे ॱ मधु ऋतु अपने सर गावे ।।
मुरुख उपदेश की मानी ॱ जहेन भूमि लेखिअ पानी ।।
नृप जगजोति हेन वानि ॱ कुजन संगति होअ हानि ।। ९ ।।

गीतार्थं श्रावयति ।।

अओरो वोल सुनु ।।

कृष्णोक्ति ॱ नचारी गीतम् ॥ धनाश्री ॥ ख ॱ चौ ॥

केलि कुतूहल दैव अधीन ॱ मन तोहे सुन्दरि न कर मलीन ॥
सुन मानिनि हमर विनती ॥ ध्रु ॥
पिशुन वचन होअ न साच ॱ अजर कनक होअ कतहु न काच ॥
जौवन समय पुनु न आव ॱ वहि गेल पानि शिर नहि धाव ॥
नृपजगजोतिमल्ल इ रस गाव ॱ शिव अनुगति पए पाइअ दाव ॥१०॥

गीतार्थं श्रावयति ॥ कृष्णोक्ति ॱ श्लोकः ॥

अयि पश्य सुरभिसमयं पश्य निजं चापि तरुणि! तारुण्यम् ॥
विफलयसि किं वृथेमे मा भूर्निजनाथ-घात-पातकिनी ॥

गोपी ॱ एत दुःख ॱ अथवा ककरा के कहव ॱ अपन प्रिय सखि सञो कहञो ॥

सखि प्रति गोप्युक्ति ॱ गण्डल गीतम् ॥ विभास ॥टूटा ॱ रूप ॥

ताहि परशे टुटल हार ॱ मही पडल वारिस धार ॥
लाजे तह्निके वाजि न भेल ॱ देह पुलकहि पुरि गेल ॥
ञोधे वदने तेजल सास ॱ छाडल मोरा मानक आस ॥
महिपति जगजोति गावे ॱ शिवके भगति सवे पावे ॥११॥

गीतार्थं श्रावयति ॥

हे सखि ॱ अवे हमरा कञोन उपाय ॥

गोप्युक्ति ॱ नचारी गीतम् ॥ विभास ॥ प्र ॥

आरसि देखल मुख आज ॱ गुरु लग होअ तञो लाज ॥
सुनु सजनी सर ॱ
सिन्दुर तिलक मेटि गेल ॱ रद खत मुख भरि देल ॥
अधर धुसर भेल रङ्ग ॱ नख पदे पूरल अंग ॥
नृपजगजोति एहो भान ॱ हर अनुगति रस जान ॥१२॥

गीतार्थं श्रावयति ॥ सखि प्रति गोप्युक्ति ॱ श्लोकः ॥

शक्यन्ते विमलधिया व्याख्यातुं सर्वशास्त्राणि ॥
परमेश्वरस्य चरितं, हृदयस्था वेदना न केनाऽपि ॥

अतःपरं शान्तिरस गण्डल गीतम् ॥

कृष्ण ॱ हे प्रिये ॱ अतः पर शान्तिरस गाउ ॥

गोपी ˎ हे नाथ ˎ अवश्य ॥

मालव ॥ टु ˎ प्र ॥

देव गुरु अपने न मान ˎ परक भरोस अगेआन ॥
अपने काहु न किछु देवे ˎ आन चाहि कोन मति लेवे ॥
अबहु भजह मन हरी ˎ मूढ जनु हलह विसरी ॥
नृप जगजोति तरासे ˎ हर पद पए अछ आसे ॥१३॥

गीतार्थं श्रावयति ॥

(कृष्ण) ˎ हे प्रिये गोपाङ्गना ˎ अओरो गाउ ॥
(गोपी) ˎ हे परमेश्वर जे आज्ञा ॥

शान्तिरस ˎ नचारी गीतम् ॥ मालव ॥ चो ˎ ख ˎ रु ˎ प्र ॥

सुकृत दुकृत पए संगहि जाए ˎ अवसर गेले हो पचताय ॥
आन न मोर गति हे ˎ गति एक त्रिपुरारी ॥ ध्रु ॥
वयस वहल विष विषयक संग ˎ तैअओ मूढ मन न तेज अनंग ॥
तहि तह उपजए सकल विकार ˎ ज्ञान विना नहि तेजए पार ॥
नृपजगजोति विचारल सार ˎ हर पद एक एहि करए उधार ॥१४॥

गीतार्थं श्रावयति ॥ शान्तिरस श्लोकः ॥

असारे इह संसारे सारमेतन्मतं मम ।
सर्वदा सर्वभावेन भगवद्भजनं, जनाः !

सर्वे मिलित्वा महेशस्य गुणानुवादं कुर्वन्ति ॥

सर्वे ˎ हे वृन्दजन ˎ श्रीमहादेवका मेना उक्ति कहइ छञो ।

भक्तिरस गण्डल गीतम् ॥ पहडिया ॥ टुटा परि ॥

कैसे आवत विवाहक साज ˎ नागट उमत तह्नि न लाज ॥
गजक चरम बाघक छाल ˎ ओढिए धरिए कर कपाल ॥
भसम धवल सगर देह ˎ गिरि सुता कैसे करति नेह ॥
नृप जगजोति एहेन भान ˎ शिव छाड़ि तिनि लोक न आन ॥१५॥

गीतार्थं श्रावयति ॥

हे वृन्दजन ˎ मेना उक्ति एहने ˎ भवानी उक्ति कहइ छञो ॥

भक्तिरस नचारी गीतम् ॥ पहडिया ॥ झम ॥

गज बाघ चरम सोभए कत अङ्ग ˎ
भसम धवल कएल जारि अनङ्ग ॥

नागट उमत कै जानत भेद,
जन्हिक सरूप नहि बुझए वेद ॥
हुनि भल चिह्न गिरिराजकुमारी,
जन्हि लाइ भेलि जुगेजुगे तपधारी ॥
नृप जगजोति बुझावए भाव ॥
सबहि काल शिव शरण सोहाव ॥ १६ ॥

गीतार्थं श्रावयति ॥

परिहृत्य शिवां परं न जाने, न शिवं चापि विहाय भिन्नदेवं ॥
इति मे मतिरस्तु सर्वदा नौरिव (दुर्गंमव)वारिधिं तारीतुम् ॥

ईश्वर ईश्वरीक एहन लीला ॥ ई संसार अनित्य जानि
शरीरार्थ कहराञो कहइ छञो ॥

सारङ्गी ॥ कहरा ॥

कवहु रअणि वड कवहु दिवस वड छओ ऋतु भिन भिन रीति,
तेहने सुख दुख शरीर सबहिक खने आनन्द खने भीति ॥
जओ लागि तेल तावे परगासए तेल विनु दीप मिझाए,
तेहने पुरुब सुकृत फल भुञ्जिअ पुनु आवए पुनु जाए ॥
वरिसा वरिसे नदी नद पुरिअ सरद सुरुज लेअ सोखि,
फतने जतने तनु संजमे राखिअ गरसिअ जरा ए समोखि ॥
दह दिस धावए धन बटुराबए अवस होअ ताहि नाश,
बीज रकत मिलि जोडल काया करब तकर कञोन आस ॥
सपन समान मगन मूढ मानस चिन्तह शिवक सरूप,
एहे जञ्जाल जाल भव छेदह गाबए जगजोति भूप ॥१७॥

गीतार्थं श्रावयति ॥ श्लोकः ॥

अटवितटीरटन्त्यथ रटन्ति यथात्मसुखं,
नद-गिरि-निर्झरेष्वनुपिबन्ति पयोऽपिभृशम् ॥
धनिषु धनाशया न च गदन्ति गिरं,
कृपणवत् पशवो वयं न पशवः सुखिनः ॥

अपरश्च ॥

ब्रह्मा विधत्ते परिपाति विष्णुर्जगन्ति देवी दनुजांश्च हन्ति ॥
शिवेति युग्माक्षरचित्स्वरूपमेकं ममास्तां शरणं भवाब्धौ ॥

॥ एतेषां गण्डल गीतानां वाढामाह ॥

कोराव ॥ वाढा जति ॥

कान्ह चरण मन लावे . किछुओ न मोहि सोहावे .
अहनिशि ओहि पए भावे ॥
तोहे प्रभु सेवि न भेल . जनम विफल वहि गेल .
हृदय हरष दुर गेल ॥
मलमय की एहे देह . हरि सञो करह सिनेह .
तह्नि संगे सोहए गेह ॥
नृप जगजोति एहो भान . हरि छाड़ि गति नहि आन .
शिव हरि भिन जनु जान ॥१॥

नाट ॥ वाढा एक ॥

बडे भागे पौलि हे राही . वलय देखओलह नाही .
एम करह निरवाही ॥
तोह सनि मोरा के आने . दुइ देह एक पराणे .
ई जग सवे केओ जाने ॥
जुवती जीव किए लेहे . अधर सुधारस देहे .
सब सुख सार सिनेहे ॥
नृप जगजोति बुझावे . शिव सेविए सुख पावे .
तञो पए बुझ रस भावे ॥२॥

वराली ॥ वाढा ठक ॥

पुरुष हृदय वडि कूट . परक वचने सुनि टूट .
जुव जीवन धन लूट ॥
नेह उपजाए तेजि जाए . ताहि नहि कओन उपाए .
आवे मोर केओ न सहाए ॥
तोहे वड रसिक सुजान . पहु विनु न रह पराण .
कतहु न देखिए तराण ॥
नृप जगजोति एहो गावे . शिव पए सिनेह बढावे .
तेहि अभिमत सुख पावे ॥३॥

जयत श्री ।। वाढा अस्ता ।।

धन जौवन पेलि पलाई . अपने शिल कतहु न जाई .
अवसर गेले पचताई ।।
कागे कोइल आनि पढावे . मधु ऋतु अपने सर गावे .
सब मन हरख बढ़ावे ।।
मुरुख उपदेश की मानी . जहेन भूमि लेखिअ पानी .
निफल हांअ सेहे वाणी ।।
नृप जगजोति हेन वानी . कुजन संगति होअ हानी .
अब मोञो निरणय जानी ।।४।।

विभास ।। वाढा रूप ।।

ताहि परशे टूटल हार . महि पडल वारिस धार .
ताहि को(न)होएत परकार ।।
लाजे तनिके बाजि न भेल . देह पुलकहि पुरि गेल .
हृदय मदने शर देल ।।
ञोधे वदने तेजल सास . छाडल मोरा मानक आस .
तखने बढल अभिलास ।।
महिपति जगजोति गावे . शिवके भगति सवे पावे .
चण्डि चरण चित लावे ।।५।।

मालव ।। वाढा प्र ।।

देवगुरु अपने न मान . परक भरोस अगेआन .
करए विषय विष पान ।।
अपने काहु न किछु देव . आन पाहि कौने मति लेव .
सुर दुज अतिथि न सेव ।।
अबहु मजह मन हरी . मूढ जनु हलह विसरी .
भव जल कञोने परि तरी ।।
नृप जगजोति तरासे . हर पद पए अछ आसे .
शरण देह दिगवासे ।।६।।

पहडिया ॥ वाढा परि ॥

कैसे आवत विवाहक साज . नागट उमत तह्नि न लाज .
तह्निक सामुह के मुह वाज ॥

गजक चरम बाघक छाल . ओढिए धरिए कर कपाल .
गल पहिरिअ रुण्डक माल ॥

भसम धवल सगर देह . गिरिसुता कैसे करति नेह .
राति दिवस मशान गेह ॥

नृप जगजोति एहेन भान . शिव छाडि तिनि लोक न आन .
हुनके सरूप केओ न जान ॥७॥

इति षोडशगीतं सम्पूर्णम् ॥

सं० ७४८ श्रावण शुदि ५ तत्सम्पूर्णम् ॥





मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learing has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha, Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant

Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But the organization was revived around year ~~1961-62~~ 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195
8877213104
vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥



॥ बिज्ञापन ॥



मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः
स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तँकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्त सभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—